सामान्य बनाम सीज़ेरियन प्रसूति

आधुनिक चिकित्सा में उपचार का निर्णय मरीज़ द्वारा करना एक मान्य बात है, लेकिन निर्णय के लिए ज़रूरी जानकारी भी तो होनी चाहिए। सवाल है कि जब बाकी मामलों में निर्णय मरीज़ के हाथों में होता है तो इस सिद्धांत को प्रसूति के समय लागू क्यों नहीं किया जाता?

यह चिंता व्यक्त की गई है कि कई देशों में सीज़ेरियन ऑपरेशन (सी-सेक्शन) से होने वाली प्रसूतियों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। पश्चिमी देशों में ही नहीं, चीन और ब्राज़ील में भी आधी से ज़्यादा प्रसूतियां इसी रास्ते पर हैं। यूके में कथित रूप से महिलाओं को सी-सेक्शन चुनने की अनुमति है, यहां तक कि तब भी जब कोई इसके लिए ज़रूरी एक भी चिकित्सीय कारण न हो।

हाल ही में रॉयल कॉलेज ऑफ आब्सटेट्रिशियन एंड गायनेकोलॉजिस्ट (आरसीओजी) ने एक सलाह पत्रक निकाला है 'सी-सेक्शन का चुनाव'। कुछ लोगों का कहना है कि यह सी-सेक्शन के खिलाफ है। जैसे टाइन हॉस्पिटल के प्रसूति विज्ञानी पॉल आयुक का कहना है कि यह पत्रक एक-तरफा है। इसमें ज़्यादा जानकारी सी-सेक्शन के जोखिमों और सामान्य प्रसूति के लाभों के बारे में दी गई है। जो महिलाएं यह तय करना चाहती हैं कि वे कौन-सा विकल्प चुनें तो उन्हें दोनों के बारे में पूरी जानकारी देनी चाहिए।

दूसरी ओर, आरसीओजी के चिकित्सकीय गुणवत्ता उपाध्यक्ष एलन केमेरॉन को ऐसा नहीं लगता। उनका कहना है कि इसमें सामान्य प्रसूति सम्बंधी जोखिमों की चर्चा भी शामिल है हालांकि सी-सेक्शन के जोखिमों के बराबर नहीं।

गौरतलब है कि सामान्य प्रसव में भी मां और बच्चे को जोखिम हो सकता है। कभी-कभी प्रसूति में गंभीर गड़बड़ियों के चलते बच्चे को दिमागी क्षति हो जाती है। एक परेशानी यह है कि सामान्य प्रसूति के बाद बढ़ती उम्र में मां को मूत्र असंयम की परेशानी का सामना करना पड़ सकता है, क्योंकि बच्चे को जन्म देते समय कूल्हे की मांसपेशियों, तंत्रिकाओं और लिगामेंट्स की क्षति होती है। एक स्वीडिश अध्ययन में पता चला कि सामान्य प्रसव के 20 वर्ष बाद 40 प्रतिशत महिलाओं को मूत्र असंयम की परेशानी हुई जबकि सी-सेक्शन के बाद मात्र 29 प्रतिशत महिलाओं को।

अन्य ऑपरेशनों के समान सी-सेक्शन चुनने वाली महिलाओं को उसके जोखिमों की जानकारी दी जानी चाहिए मगर आयुक का मानना है कि सामान्य प्रसव के बारे में भी ऐसी जानकारी देना ज़रूरी है मगर ऐसा होता नहीं है क्योंकि सामान्य प्रसूति को प्राकृतिक माना जाता है।

अब यूके कोर्ट का एक फैसला इस सोच को चुनौती दे रहा है। नाडिन मॉन्टगोमरी ने एक अस्पताल पर 16 साल बाद मुकदमा दायर किया कि सामान्य प्रसूति के दौरान उनके बेटे को गंभीर रूप से दिमागी-क्षति हुई थी। कोर्ट ने फैसला दिया है कि डॉक्टरों को मॉन्टगोमरी को सामान्य प्रसूति के जोखिमों के बारे में बताना चाहिए था। डॉक्टर का जवाब था कि उन्होंने मॉन्टगोमरी को यह जानकारी नहीं दी क्योंकि आम तौर पर यह जानकारी मिलने पर महिला सी-सेक्शन चुनती हैं और वह महिला के लिए खतरनाक हो सकता है।

वैसे मॉन्टगोमरी का मामला विशेष है - उसमें सामान्य प्रसूति के दो जोखिम मौजूद थे - उसका कद कम था, यानी उसके कूल्हे सामान्य से छोटे रहे होंगे और उसे डायबिटीज़ भी थी। मगर कानूनी विशेषज्ञों का कहना है कि यह फैसला जोखिम-मुक्त महिलाओं पर भी लागू होता है। केमेरॉन का मानना है कि अब सामान्य प्रसूति से सम्बंधित जोखिमों के बारे में भी महिलाओं को बताना ज़रूरी हो जाएगा। ***(स्रोत फीचर्स)***